मधु-श्रव्य

भक्ति गीत संग्रह

मधु सिंघी

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

मधु-श्रव्य

भक्ति गीत संग्रह

मधु राजेन्द्र सिंघी

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN - " 978-93-5372-039-1"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ९४२४७६५२५९

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१९, **मधु सिंघी**

छायाचित्र - मधु सिंघी

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०.०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

MADHU SHRAVYA BY MADHU RAJENDRA SHIGHI

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

मेरा मंतव्य

सर्वप्रथम मैं अपने भक्ति-गीत रूपी पुष्पों को प्रभु के चरणों में अर्पित करती हूँ। प्रभु से जुड़ने का सबसे सरल और सहज भक्ति-मार्ग अलौकिक अनुभूति देता है, जो अपने आप में अद्वितीय है। लगातार अच्छे साहित्य के पठन-पाठन व लेखन से हमें अपने आपको सकारात्मक बनाये रखने में भरपूर सहयोग मिलता है।

संस्कृत (दर्शन) में स्नातकोत्तर करने के बाद मुझे शब्दों की उत्पत्ति-व्युत्पत्ति समझना और उनका प्रयोग करना अच्छा लगने लगा था । पाठ्यक्रम में होने के कारण दर्शन मेरा प्रिय विषय बन गया । वैसा ही सान्निध्य मुझे परिवार और मित्रों का मिलता रहा । गायन में विशारद करते हुए गीत लिखने में भी रुचि बढ़ती गयी। इसके लिए मैं अपनी सखी स्व. श्रीमती ज्योत्सना विजय दर्डा का अवश्य जिक्र करना चाहूँगी, जिनके साथ रहकर मुझे संगीत को जानने और समझने का मौका मिला। हम साथ बैठकर घंटों गीत-संगीत का रियाज करते थे। भजन और गीत लिखते थे। ऐसा साथ पाकर शादी के करीब २० वर्षों के बाद विद्यार्थियों की तरह पढ़कर गायन विषय की परिक्षाएँ देने, गीतों के स्टेज शो करने, आकाशवाणी और दूरदर्शन में कार्यक्रम प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ, जो मेरे जीवन का एक सुखद अध्याय बन गया। उस दौरान भजन लिखने और गाने का जो शौक बढ़ा वो आज तक जिंदा है। जब-जब मुझे अवसर मिलता है, मैं अपना नया गीत बनाकर कार्यक्रम में प्रस्तुत करती हूँ।

आकाशवाणी से कविताएं प्रस्तुत करती हूँ। यह मुझे मेरे अपने हूनर को जीवित रखने, विचारों को प्रस्तुत करने और समय का सदुपयोग करने का सही माध्यम लगता है। सचमुच लेखन, गीत-संगीत में डूबे रहना एक स्वयं में जीने की सुखद अनुभूति है ।

पारिवारिक जिम्मेदारियों से जैसे-जैसे निवृत होती गयी वैसे-वैसे मैनें मेरे निजी समय को अपने साहित्यिक और दार्शनिक विकास में लगाया। गीत, भजन के बाद कविता, दोहा, रोला, हाइकु, तांका, चौका, रेंगा, कहमुकरी इत्यादि लेखन विधाएँ सीखती रही। अब तक करीब दस पुस्तकें साझा और दो पुस्तकें एकल 'मधुकृति' (हाइकु) और 'मधुछंद' (दोहा) के द्वारा मुझे अपनी सोच पाठकों तक पहुँचाने का सुअवसर प्राप्त हुआ । आज शब्द सुगंध और अंतरा शब्दशक्ति के प्रकाशन ने आप लोगों के सामने मुझे एक और नयी पुस्तक 'मधु-श्रव्य' (भक्ति गीत) प्रस्तुत करने का सुअवसर प्रदान किया। इसके लिए मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानती हूँ। आप लोगों को अगर मेरे भक्ति गीत पसंद आये तो निःसंकोच मुझसे इसकी गायन शैली पूछ सकते हैं। मुझे हार्दिक प्रसन्नता होगी।

भक्ति गीतों को प्रस्तुत करने से पहले मैं अपने पूर्वजों और सभी शिक्षकों से आशीर्वाद लेना चाहती हूँ, जिन्होंने मुझे सदैव धर्म और कर्म मार्ग की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। अंत में आप सभी सुधी जनों को धन्यवाद करती हूँ। आपकी प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

मनोगत

मधु सिंघी जी से मेरा परिचय पिछले ग्यारह वर्षों से है। संवेदनशील मन और शुद्ध अंतःकरण की धनी मधुजी का व्यक्तित्व प्रेरणादायी है। नागपुर की दिव्यांग बच्चों की कोई स्कूल ऐसी नहीं है जो इन्हें नहीं जानती हो, क्योंकि उनकी हर जरूरत का मधुजी ध्यान रखती है। सेवा भाव से ओतप्रोत मधुजी हमारे सभी बच्चों की चहेती है।

सामाजिक क्षेत्र के अलावा इनके संगीत एवं लेखन कला की पहचान हमें हमारे गणेशोत्सव में हुई। इन्होंने समर्पित भाव से समाज सेवा का कार्य करने वाली महिलाओं को एकत्रित कर न केवल 'समरूपण' की स्थापना की बल्कि उनके साथ ये प्रति वर्ष दिव्यांग बच्चों के लिए 'भजन माला' का कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं, जिससे हमारे बच्चों में हर्षोल्लास का माहौल बनता है। भजन के माध्यम से सामाजिक दायित्व निभाने की इनकी सोच अनुकरणीय है।

मधुजी की भजनों की पुस्तक 'मधुश्रव्य' आज प्रकाशित होने जा रही है और शुभकामनाएँ देने का शुभ अवसर मुझे प्राप्त हुआ है इसके लिए मैं आभार मानता हूँ। मधुजी की रचनाएँ अपने नाम को सार्थक करती हुई सहज, सरल, मकरंद रस घोलती हुई पाठक के मन को तृप्त करती है। जैसे कोई मूर्तिकार पूरे मनोयोग से पत्थर की मूर्ति में प्राण फूँक देता है वैसे ही विविध रूप में मधुजी का लेखन चाहे दोहा, हायकू, कविता, भक्ति गीत हो शुष्क पाषाण मन को भी द्रवित कर देता है। मधुजी आपकी लेखन यात्रा को मेरी अनेकानेक शुभकामनाएँ।

गिरिश चंद्र वराड़पांडे (संगीतज्ञ)
शाला प्रमुख 'स्नेहांगण' दिव्यांग शाला
सीताबर्डी,नागपुर।

अनुक्रमणिका

1.	खुशियों के पल	7
2.	उत्सव की घड़ियाँ	8
3.	ओ हो गजानंद	9
4.	भक्ति का रस पान	10
5.	रहता बोझा मन पर	11
6.	भावों का समर्पण	12
7.	मानवता का दीप	13
8.	जन्म मरण के फेरे	14
9.	मनुष्य जन्म है न्यारा	15
10.	भक्ति रंग में रंग जायें	16
11.	तेरी करुणा हम पे बरसे	17
12.	लागी लगन प्रभु से	18
13.	मन चितवन से देखूं	19
14.	कल सपने में बात	20
15.	ज्ञान की बाती	21
16.	ज्ञान गहरा समंदर	22
17.	गहरे उतरें प्रभु भक्ति में	23
18.	प्रभुजी याद आते हैं	24
19.	हे ज्ञानी गुरुवर	25
20.	ज्ञान की गंगा	26
21.	श्री हरि कृष्णा	27
22.	पधारो प्रभुजी	28
23.	व्याकुल मन	29
24.	बन जाओ बस बच्चा	30
25.	बढ़ने की आगे कामना	31
26.	नित्य निरंतर निर्लिप्त भाव	32

खुशियों के पल

(तर्ज-आजा सनम मधुर..)

खुशियों के पल, मन में नाचे मयूर,
आज करलो जतन, मंशा पूरी जरूर,
श्रद्धा है मन में अपार-२
दिल में उमंग, आज भक्ति तरंग
गणराज का प्रसंग, आज झूमे अंग-अंग
प्रभु में है शक्ति अपार-२

शिवजी की तुम शान हो, पार्वती का अभिमान हो।
गणनायक गजानंद हो, भक्तों के भगवान हो।
कार्तिकेय के भ्राता हो, जगत के त्राता हो।
रिद्धि सिद्धि दाता तुम, वेदों के ज्ञाता हो।
खुशियों के पल...

सबसे पहले ध्यान हो, कोई भी शुभ काम हो।
मुख पे तेरा नाम हो, सफल हमारा काम हो।
सुख-मंगल कर्ता हो, दुख-विघ्नहर्ता हो।
जग के खेवणहार तुम, सबके तारणहार हो।
खुशियों के पल...

गणपति का त्यौहार है,आज सजा दरबार है।
मन में हर्ष अपार है, सन्मुख पालनहार है।
फूल माला सजे , रोली माथे चढ़े।
घी के दीपक जले, भोग लड्डू का चढ़े।
खुशियों के पल...

उत्सव की घड़ियाँ

घड़ियाँ सुख की आज आयी
गणपति लाये उत्सव।
मन से मन को जोड़ने का,
करना है हमको जतन।
घड़ियाँ सुख की आज आयी।

विपदा कोई भी आ जाये,
विघ्नों का करते हैं अंत।
सच्चे दिल से नाम ले लो-२,
कट जायेंगे पाप अनंत ।
घड़ियाँ सुख की आज आयी।

अभिलाषा कोई भी मन की,
पूरी करते ये तुरंत।
कृपादृष्टि हम पर होगी २,
तिर जायेंगे भव अनंत।
घड़ियाँ सुख की आज आयी।

श्रद्धा तन-मन से हमारी,
नमन करते हैं भगवंत ।
भक्ति सद्भावों से करते-२,
खुशियाँ पायी है अनंत।
घड़ियाँ सुख की आज आयी गणपति ....

ओ हो गजानंद

ओ हो गजानंद आये हैं,
आ हा लंबोदरा आये हैं।
ओ हो कि सब हर्षाये हैं,
आ हा दिल मिल जाये हैं।

कोई भी विपदा आन पड़े,
विघ्नहर्ता का ध्यान करें।
प्रिय मोदक का भोग चढ़े,
गणपति का गुणगान करें । ओहो...

शिवनंदन तुम गौरी सुताय,
पूरण कर दो सबके काज।
गणाधीश तुम हो गणराज,
अंतर मन हर्षाया आज। ओहो...

अवसर ऐसा आया आज,
हम भक्तों को तुम पे नाज।
सन्मुख रिद्धि-सिद्धि दातार,
सात सुरों से सज गया साज। ओहो...

भक्ति का रस पान

नित भक्ति का रस पान करूँ,
मैं भगवन का ही ध्यान धरूँ।
गुणिजनों का गान करूँ,
मैं जन जन का सम्मान करूँ।

दुख नाश हो, कर्म नाश हो,
बोधि लाभ भर लूँ।
शुभचर्या हो, शुभ क्रिया हो,
शुद्ध भाव भर लूँ।
नित भक्ति...

कटु वचन का त्याग करूँ,
मधुर वचन बोलूँ।
हृदय तराजू, पर हितकारी,
संभाषण तोलूँ।
नित भक्ति...

अनुशासन को मैं मानूँ,
प्रीति भाव भर लूँ।
यम-नियम को मैं जानूँ,
गुण-दोष तोलूँ।
नित भक्ति...

सत्य, अहिंसा, अस्तेय का,
मुझे अभिज्ञान हो।
मन-वचन और काया से,
इनका संज्ञान हो।
नित भक्ति...

विषय-कषायों को मैं त्यागूँ,
तजूँ परिग्रह को ।
मोक्ष मार्ग पर बढ़ती जाऊँ,
ऐसा अनुग्रह हो ।
नित भक्ति...

रहता बोझा मन पर

रहता बोझा मन पर मेरे,
कर्मों का यह भार है।
पाप-पुण्य की शक्ल में,
ये तो आते बारंबार है।

इस दुनिया में आना मेरा,
कर्म चुकाना सार है।
इस दुनिया में कर्म मेरे,
सूख-दुख का आधार है।
पाप-पुण्य.....

नहीं समझता जीव इसे,
जो कर्मों का आधार है।
छूटे बंधन कर्मों से तो,
जाना फिर उस पार है।
पाप-पुण्य.....

काम-क्रोध को त्यागूँ पहले,
और झूठा अहंकार है।
मोह-माया से दूर हटूँ मैं,
जीवन का उद्धार है।
पाप-पुण्य.....

भावों का समर्पण

(तर्ज–कई बार यूँ ही....)

प्रभु के चरण में अर्पण है,
ये जो भावों का समर्पण है,
हम सोचने लगते हैं।
अनजाने डर से हैं चिंतित,
मनचाही सोच में भ्रमित,
हम सोचते रहते हैं।

समझें ना समझें ना, प्रपंच ये समझें ना,
हल खोजें कैसे कुछ समझ ना आये,
दुख को कैसे भुलायें, सुख को गले लगायें।
प्रभु के चरण....

जानें ना जानें ना, इस मन को जानें ना,
सही राह इसको कैसे हम दिखायें,
तृष्णा पे काबू पायें, संयम में हम रह पायें।
प्रभु के चरण....

मानें ना मानें ना, गलतियाँ अपनी माने ना,
ये जो सोच हमारी हमसे लड़ती रहती है।
पर की गल्ती भुला दें, खुद को हम समझा दें।
प्रभु के चरण....

मानवता का दीप

मानवता का ओ मनवा दीप जलाना।
मन में अंधेरा हो मनवा दीप जलाना।।

निर्बल का संबल तू बनना,
अबला की नित रक्षा करना।
करके ना जताना हो,मनवा तू ना जताना।
मानवता का ओ मनवा दीप जलाना।

बेईमानी में ना उलझना,
झूठ फरेब से बच के रहना।
साथ निभाना हो,सत्य का साथ निभाना।
मानवता का ओ मनवा दीप जलाना।

नेकी कर कुए में डालना,
अपने गुणों का बखान ना करना।
मन में ना लाना हो,अहं ना मन में लाना।
मानवता का ओ मनवा दीप जलाना।

जन्म मरण के फेरे

(तर्ज-तेरे प्यार का आसरा...)

जन्म मरण के मिथ्या है फेरे-२
क्यूँ उलझा है साँझ सवेरे, क्यों उलझा है ।
जीवन के है झूठे झमेले,
डर-डर के क्यों इसको झेले,
क्यूँ उलझा है साँझ सवेरे, क्यों उलझा है ।
माता-पिता की ममता की पाती,
बहना की बतियाँ मन को भाती,
मनमोहक है जीवनसाथी,
अंत में छूटे संगी साथी,
क्यूँ उलझा है ।
बचपन बीता जाये जवानी,
जीवन ढलती सांझ सुहानी,
आया बुढ़ापा चेत ले प्राणी,
पग-पग बढ़ती मौत अंधेरी,
क्यूँ उलझा है ।
जाते-जाते काम तू कर ले,
सुकर्मों का थैला भर ले,
नेकी करके संग में रख ले,
आत्मा को तू निर्मल कर ले,
क्यूँ उलझा है ।
जन्म मरण.....।

मनुष्य जन्म है न्यारा

मनुष्य जन्म है सबसे न्यारा,
इस जीवन को समझो प्यारा।
अब तो बंदे जाग जरा-२
इसे ना व्यर्थ गंवाना-२

त्याग से काटो तप से काटो,
तन से काटो मन से काटो,
लेकिन इन कर्मों को काटो हो -२
ये जन्म-मरण का फेरा -२
मनुष्य जन्म है....

जिनशासन की रीत यही है,
प्रभु भक्ति में लीन वही है,
सच्चा सुख जो ध्यान में ढूढ़े हो-२
आत्मबल से ये पाना-२
मनुष्य जन्म है ....

झूठा मान है इस जीवन का,
तोड़ दे बंधन सबसे मोह का,
त्याग की राह पकड़ ले प्राणी हो-२
मोक्ष मार्ग पे चलना-२
मनुष्य जन्म है ...

भक्ति रंग में रंग जायें

सद्‌कर्मों के भाव बढ़ायें,
सुख का ये अहसास,
अहसास, अहसास,अहसास, अहसास।
भक्ति रंग में हम रंग जायें,
उत्सव होगा खास।
अहसास, अहसास, अहसास, अहसास।
झूठ-कपट में ना हम उलझें,
लोभ-लालच को शत्रु समझें।
पूरी हिम्मत से हो काम,
सुख का ये अहसास।
अहसास, अहसास, अहसास, अहसास।
मधुरवाणी हम मुख से बोलें,
हिय में रहे सदा प्रेम हिंडोले।
किसी का करें ना प्रतिकार,
सुख का ये अहसास।
अहसास, अहसास, अहसास, अहसास।
परोपकार की लिए भावना,
जीवन में हो सच्ची साधना।
किसी के आ जायें बस काम,
सुख का ये अहसास।
अहसास, अहसास, अहसास, अहसास।
भक्ति रंग में....।

तेरी करुणा हम पे बरसे

(तर्ज- इतनी शक्ति...)

ऐसा वरदान दे दो प्रभुवर,
तेरी करुणा सदा हम पे बरसे।
अपने अंदर ही खुद झांककर हम,
गल्तियां अपनी खुद ही समझें।

सुख में नहीं तुमको कभी भूलें,
दुख में भी कभी हम ना डोलें।
बीच राह में आये मुसीबत,
पूरी हिम्मत से हम उसको झेलें।
हर प्राणी से प्रेम करें हम,
मधुरवाणी मुख से हम बोलें।
अपने अंदर....

विपदा गर किसी पर भी आये,
सिर्फ मदद के हाथ हम बढ़ायें।
कर सकें हम किसी की भलाई,
अपना जीवन ही संवर जाये।
हमको कुंदन के जैसा निखारो,
अपने कर्मों की चादर धोलें।
अपने अंदर....

लागी लगन प्रभु से

लागी जिसकी लगन प्रभु से,
हाँ सच्चा धनवान वही है।
लागी जिसकी लगन प्रभु से।

धर्म अगर जीवन में ना होता, ओ-२
सुख की छाँव में कोई ना सोता।
पुण्य की लौ जलाने वालों- २
हाँ सच्चा धनवान वही है।
लागी जिसकी लगन प्रभु से।

धर्म इंसान बना देता है, ओ -२
धर्म भगवान मिला देता है।
नैतिकता का साथ निभायें -२
हाँ सच्चा इंसान वही है।
लागी जिसकी लगन प्रभु से।

मदिर-मस्जिद अलग नहीं है, ओ-२
प्रभु से मिलन के द्वार यही है।
मन से भेद मिटाने वालों-२
हाँ सच्चा पुण्यवान वही है।
लागी जिसकी लगन....

मन चितवन से देखूं

मन चितवन से देखूं तुमको,
भक्ति रस मैं पी जाऊँ ।
प्रबल मनोरथ ध्यान लगाऊँ,
व्यर्थ प्रलाप से बच जाऊँ ।

ज्ञान का दीपक जीवन में ,
स्वयं प्रकाश फैलायेगा ।
सम्यक दृष्टि प्रकट हो जाये ,
अंधकार मिट जायेगा ।।
मोह माया के भ्रम जाल में,
उलझ नहीं बस मैं जाऊँ ।
प्रबल मनोरथ ध्यान लगाऊँ,
व्यर्थ प्रलाप से बच जाऊँ ।

कालचक्र तो चलता जाये ,
कभी नहीं रुक पायेगा ।
गर तंद्रा से जग जायें तो ,
सूर्य उदय हो जायेगा ।।
तेजस किरण आलौकित करके ,
आत्म दर्शन मैं पाऊँ ।
प्रबल मनोरथ ध्यान लगाऊँ,
व्यर्थ प्रलाप से बच जाऊँ ।
मन चितवन...

कल सपने में बात

कल सपने में हुई प्रभुजी से मुलाकात।
बातों बातों में ही कैसे निकल गयी रात।।

वो समझाने लगे अच्छी ज्ञान की बात।
पलकें झपकायी और निकल गयी रात।।
कल सपने में..

रिश्तों से बँधे हैं मोह-बंधन के तार।
वो समझाने लगे ये संसार है असार।।
कल सपने में..

इच्छाओं की पोटली का झेल रहे भार।
जग में आवागमन का यही है आधार।।
कल सपने में..

शुभ-अशुभ कर्मों के भावों को बस जान।
मन, वचन और काया के भेद को पहचान।।
कल सपने में..

मनुष्य जन्म है दुर्लभ ये बात मेरी मान।
मंतव्य जग में आने का खुद ही पहचान।।
कल सपने में...

ज्ञान की बाती

बाती ज्ञान की मन में जलाया करो।
भार अनन्त भवों का हटाया करो।।

लोभ लालच तो दिल में आते ही हैं,
स्वार्थ कपट भी मन को सताते ही हैं।
सद्भावों का बिगूल बजाया करो,
मनुष्य जन्म को सफल बनाया करो।।
बाती ज्ञान की...

काम क्रोध तो मन को जलाते ही हैं,
मोह माया भी मन को लुभाते ही हैं।
सुविचारों का साज सजाया करो,
मनुष्य जन्म को सफल बनाया करो।।
बाती ज्ञान की...

भक्ति रंग में जब तुम रंग जाओगे,
झूठी मान मर्यादा से बच पाओगे।
सन्मार्ग के पथ को अपनाया करो,
मनुष्य जन्म को सफल बनाया करो।।
बाती ज्ञान की...

ज्ञान गहरा समंदर

(तर्ज-इचक दाना...)

इतना गहरा ज्ञान समंदर, जितना डूबे,
उतना पायें, पाते जाना।
नेकियों के भाव हो अंदर, जितना कहते,
उतना अच्छा करते जाना।
इतना गहरा...
ओ....
जैसा चाहे मंजर वैसा दिख ही जाता है।
जैसा सोचें हम वैसा काम हो ही जाता है।
कुंदन जैसा निखरें हम सब,
जितना समझें उतना पायें पाते जाना।
इतना गहरा...
ओ....
है पतंग में जज्बा ऐसा उड़ ही जाता है।
तेज हवाओं का भी झोंका सह वो पाता है।
शुद्ध विचारों को हम रखलें,
पवन वेग सा बहते जायें बहते जाना।
इतना गहरा...
ओ.....
विचारों का गहरा बवंडर उठ ही जाता है।
उछल उछल कर लहरों जैसे शोर मचाता है।
शांत मन हो जाये हमारा,
अमन चौन से रहते जायें रहते जाना।
इतना गहरा...

गहरे उतरें प्रभु भक्ति में

ध्यान लगे प्रभु की भक्ति में,
गहरे उतरें प्रभु भक्ति में।
ऐसा मन को बाँध ले प्राणी
ध्यान लगे प्रभु की भक्ति में,
गहरे उतरें प्रभु भक्ति में।
जित उत देखें कर्म ही घेरे,
मन पंछी के लाखों डेरे।
मन में सबके हलचल बहुत है,
ध्यान का मार्ग कठिन बहुत है।
ऐसा मन को बाँध...
ध्यान लगे...
गहरे उतरे...
जीवन जीना सीख ले अब तो,
काँटों पे चलना सीख ले अब तो।
भटके मन को थाह मिलेगी,
एक नयी फिर राह मिलेगी।
ऐसा मन को बाँध...
ध्यान लगे...
गहरे उतरे...
मन-वीणा के तार तू कसले,
जीवन-लय प्रज्ञा से समझले।
अन्तःकरण के सुर ही सजेंगे,
आत्म-ताल को खुद समझेंगे।
ऐसा मन को बाँध...
ध्यान लगे...
गहरे उतरे...

प्रभुजी याद आते हैं

प्रभुजी याद आते हैं
प्रभुजी याद आते हैं
खुशियों से मन नाच रहा हो,
चाहे दुख में दिल डूबा हो..
प्रभुजी याद....।

युग युग जैसे एक पल बीते,
साल,मास और दिन भी रीते।
भोर-शाम का पहरा गहरा हो..
भोर-शाम का पहरा गहरा,
हो उदास मन घोर अंधेरा।
प्रभुजी याद आते हैं २

सजी राग हो स्वर लहरी में,
भीगे तन-मन भले उमंग में।
साथ प्रभु का सबसे जुदा हो..
साथ प्रभु का सबसे जुदा,
रहता दिल में यही सदा।
प्रभुजी याद आते हैं २

जीवन के हर मोड़ पे चाहे
फूल और काँटे राह में आये
सुकून मन में फिर भी आये हो..
सुकून मन में फिर भी आये
किरण आशा की वो ही दिखाये।
प्रभुजी याद आते हैं २
खुशियों से...

हे ज्ञानी गुरुवर’

(तर्ज–हे शारदे माँ)

हे ज्ञानी गुरुवर हे ज्ञानी गुरुवर,
अज्ञानता से हमें तारो गुरुवर।

सम्यक दर्शन का ध्यान तुम्हीं से,
सम्यक चरित्र का ज्ञान तुम्हीं से।
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे,
तेरी शरण हम, हमें तारो गुरुवर।
हे ज्ञानी गुरुवर...

पंच महाव्रत का पालन करना,
सत्य, संयम, तप को समझना।
हम भी तो जानें, हम भी तो माने,
वरदान ऐसा, हम पायें गुरुवर।
हे ज्ञानी गुरुवर...

श्रमण संघ की शान है तुमसे,
अनुशासन का मान है तुमसे।
हम भी तो सीखें, हम भी तो समझें,
विनती ‘मधु’ की स्वीकारो गुरुवर।
हे ज्ञानी गुरुवर...

ज्ञान की गंगा

ज्ञान की बह रही गंगा, तुम उसमें नहा लेना।
मन को भिगो कर चंगा, स्वयं को बहा देना।।
न्याय अन्याय हो, मान अपमान हो ।
समता का भाव हो, सबका सम्मान हो।
सच्चाई की सीख सिखाना,
स्वयं को समझा लेना।
ज्ञान की बह रही गंगा...
प्रेम नहीं कर सको, द्वेष नहीं करना ।
मन की संवेदना से, जीवन को सहेजना।
नैतिकता की सीख सिखाना,
स्वयं को समझा लेना।
ज्ञान की बह रही गंगा...
दान नहीं कर सको, दया दिल में रखना।
हक पर दूसरों के, नजर नहीं रखना।
परोपकार की सीख सिखाना,
खुद को समझा लेना।
ज्ञान की बह रही गंगा...
देव नहीं बन सको, दानव नहीं बनना।
विनय-विवेक रहे, बुद्धि से समझना।
मानवता की सीख सिखाना,
स्वयं को समझा लेना।
ज्ञान की बह रही गंगा...

श्री हरि कृष्णा

(तर्ज-तुम्हीं मेरी मंजिल...)

श्री हरि कृष्णा, श्री हरि कृष्णा
मन में बसे हो, मन में बसे हो।
मुरली मनोहर, बंसी बजाये,
संग गोपियों के रास रचाये।
श्री हरि कृष्णा....
आप ऐसे दीपक, तेल ना बाती,
ना है अंधियारा ना, कालिमा छाती।
आत्मज्योति जला दो, करो उजियारा,
मन में बसे हो, मन में बसे हो।
श्री हरि कृष्णा....
आप क्षीरसागर, दिव्य स्वरूपा हैं,
त्रिलोकी स्वामी, आप अलौकिक है।
आँखें बंद करके मैं, अपलक निहारूँ,
मन में बसे हो, मन में बसे हो।
श्री हरि कृष्णा....
मैं हूँ अज्ञानी, असमंजस में स्वामी,
राह बताओ अब तो, है मुक्तिगामी।
ध्यान करूँ मैं मन में, दर्शन पाऊँ,
मन में बसे हो, मन में बसे हो।
श्री हरि कृष्णा....

पधारो प्रभुजी

(तर्ज- झुकजाई रे नींबड़ली..)

पधारो प्रभुजी, म्हारे मनड़े में थांरी आस -२
हो...थर-थर काँपे म्हारी काया,
दुख में जियो घबराय।
अरज म्हारी सुणजो ओ...
म्हारे मनड़े में थांरी आस।

झूठा आल-जंजाल में फँस गई
भटक गयी मैं नाथ,
भूल गई मैं रस्तो थांरो,
अबे चाहूँ थांरो साथ।
अरज म्हारी ...

रिश्ते-नाते भाईचारे में,
उलझ गयी दिन रात।
क्यूँ नहीं मिल्या म्हने प्रभुजी,
अबे सुण लो म्हारी बात।
अरज म्हारी ...

सगला जग रा प्रपंच छोड़ने,
ध्याऊँ थानें मैं आज।
अबे म्हारी अरज सुण लीजो,
भक्ति रा सजाऊँ साज।
अरज म्हारी ...

व्याकुल मन

(तर्ज–म्हारी प्रीतड़ली री डोर)

व्याकुल मन जीवन डोर,
म्हासूँ संभले नहीं ओर।
प्रभुजी आवजो, म्हने संभालजो।।

मोहमाया रा धागा उलझ्या,
सुलझाया नहीं सुलझे जी।
थांरो म्हारो करती करती,
कुण म्हारो नहीं जाणूजी।
प्रभुजी आवजो, म्हने संभालजो

चलता–चलता रस्तो भूली,
पग–पग ठोकर खाऊँजी।
बड़ी भंवर में फँस गई मैं तो,
कैसे बाहर आऊँजी।
प्रभुजी आवजो, म्हने संभालजो।

कोई केव्हे शिवजी साचा,
कोई पीर–पैगंबर जी।
कोई जैन और बौद्ध ने जाणे,
मानव धर्म ने भूले जी।
प्रभुजी आवजो, म्हने संभालजो।

कौन झूठा कौन सच्चा

(तर्ज-आओ बच्चों तुम्हें दिखाएं...)

उहापोह में सभी पड़े हैं,
कौन झूठा कौन सच्चा ।
क्या जरूरत है इसकी,
बन जाओ बस बच्चा ।।
बच्चे मन के सच्चे -४

अपने में बस झांक लो,
खुद को बनाना सच्चा तुम।
मन मलीन नहीं रहेगा,
बन जाओ बस बच्चा तुम।।
उहापोह में...
बच्चे मन के सच्चे -४

सबसे प्रीत, बनेंगे मीत,
नहीं देना कभी गच्चा तुम।
परिवर्तन होगा जरूर ,
बन जाओ बस बच्चा तुम।।
उहापोह में...
बच्चे मन के सच्चे -४

जीवन का है एक नियम,
काम करना अच्छा तुम।
इसको बस तुम साध लो,
बन जाओ बस बच्चा तुम।।
उहापोह में...
बच्चे मन के सच्चे -४

बढ़ने की आगे कामना

बढ़ने की आगे कामना, हिम्मत से हमको थामना।
विश्वास दृढ़ संग में रहे, मिल कर करेंगे सामना।।

शक नहीं है कोई इसमें, हम हकीकत जानते,
ताकत हमारी हौंसला है, हम सभी पहचानते।
किरण आशा की जगी, अब होगी पूरी कामना
विश्वास दृढ़ संग में रहे, मिल कर करेंगे सामना।।

प्रेम और उल्हास से, जीना तो हम भी जानते,
साथ कर्मठता हमारे, गम नहीं पहचानते।
उद्देश्य लेकर ही कोई, जीने की अब तो कामना,
विश्वास दृढ़ संग में रहे, मिल कर करेंगे सामना।।

संबल हमारा ज्ञान है, अरमान अपने जानते,
छू लेंगे हम ऊँचाइयाँ, मन की तरंग पहचानते।
आत्मबल है साथ में, और सफलता की कामना,
विश्वास दृढ़ संग में रहे, मिल कर करेंगे सामना।।

नित्य निरंतर निर्लिप्त भाव

नित्य निरंतर निर्लिप्त भाव से,
सदगुणों की हो साधना ।
चिंतन से चित्त शुध्द करें हम,
परोपकार की हो भावना ।।
नित्य निरंतर...
आये नहीं कुछ लेकर संग में,
ना कुछ लेकर जाना है ।
जो कुछ पाया हमने जग से,
बस यहीं लौटाना है ।।
नित्य निरंतर...
सबके रंग अब घुल मिल जाये,
मानस मन को मधुर करें ।
शिक्षित हो सब वर्ग हमारा,
बढ़ते कदम अब नहीं रुके ।
नित्य निरंतर...
समता से संसार सुहाना,
संग में रह विस्तार करें ।
समरूपण हो भाव हमारे,
सब मिलकर ये काम करें ।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - मधु राजेंद्र सिंघी

जन्म - १० जनवरी

शिक्षा- एम.ए. (संस्कृत), विशारद (गायन)

रुचि - समाजसेवा, अध्ययन, लेखन, गायन, सिलाई, फोटोग्राफी

कार्य- संस्थापिका-समरूपण

वेबसाइट- www.samrupan.org

संपर्क - **9422101963**

प्रकाशित - **एकल संग्रह** - १. मधु-कृति (हाइकु व हाइगा संग्रह), २. मधु-छंद (काव्य संग्रह)
साझा प्रकाशित पुस्तकें - १. गीतमाला (भजन), २. जैन भजन संग्रह (भजन), ३. जैन भजनावली (भजन), ४. झाँकता चांद (हाइकु), ५. हाइकु सम्मेलन (हाइकु), ६. तांका की महक(तांका), ७. प्रवाह (हाइकु), ८. हाइकु की सुगंध (हाइकु), ९. कस्तूरी की तलाश (रेंगा), १०. हाइकु मंजूषा (हाइकु), ११. चारू चिन्मय चोका (चोका संग्रह)

भजन एवं कविता प्रसारण- १. आकाशवाणी, नागपुर, २. सीटीकेबल,नागपुर,३. दूरदर्शन,नागपुर ४. दूरदर्शन (डीडी१), कविताएँ प्रकाशित - सुप्रसिद्ध हिंदी पेपर नवभारत, नागपुर,

सम्मान (समाजसेवा एवं लेखन) - १. नागपुर महानगर पालिका, २. महिला अघाड़ी, मोर्चा, नागपुर, ३. कला मंच, नागपुर, ४. टाइम्स आफ इंडिया, नागपुर, ५. स्नेह आंगन मातृसेवा संघ, ६. श्री किसन मूक बधिर, ७. वी आई ए, ८. आदर्श महिला मंडल, ९. चाइल्ड एडोप्शन एंड एजूकेशन, नागपुर, १०. भावांजलि सम्मान, जोधपुर, ११. हाइकु रत्न सम्मान, छत्तीसगढ़, १२. साहित्य कला सेवा मंडल, नागपुर, १३. ज्येष्ठ राजपूत फोरम, नागपुर, १४. मात्सुओ 'बासो' शब्द शिल्पी अलंकार, पानीपत, १५. कविता बहार सम्मान, १६. हिंदी महिला समिति, नागपुर, १७. लाईफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-039-1

मूल्य 60/-

शब्द सुगंध